

चुनाव आयोग, निष्पक्षता और पारदर्शिता

सवाल जरूर उठता है कि चुनाव आयोग के भीतर निर्णय लेने की प्रक्रिया कितनी पारदर्शी है और जनता को उसके बारे में पर्याप्त जानकारी किस तरह मिलती है .

दरअसल, प्राकृतिक न्याय का वैश्विक सिद्धांत है कि न्याय केवल किया ही नहीं जाना चाहिए, बल्कि वह होता हुआ दिखाई भी देना चाहिए . चुनाव आयोग जैसी संवैधानिक संस्था के लिए यह सिद्धांत और भी महत्वपूर्ण हो जाता है . मतदाता को यह भरोसा होना चाहिए कि मतदाता सूची में नाम जोड़ने, हटाने, संशोधन करने से लेकर चुनाव कार्यक्रम और अन्य महत्वपूर्ण निर्णयों तक प्रत्येक प्रक्रिया स्पष्ट नियमों और समान मापदंडों के आधार पर संचालित हो रही है. आयोग के भीतर असहमति होना अपने आप में लोकतांत्रिक व्यवस्था की कमजोरी नहीं है . लोकतांत्रिक संस्थाओं में विमर्श और मतभेद

स्वाभाविक हैं . बल्कि असहमति को दर्ज करने और उसका संस्थागत समाधान करने की व्यवस्था संस्था को अधिक मजबूत बनाती है . लेकिन जब ऐसे मतभेद सार्वजनिक चर्चा का विषय बने तो आयोग के लिए यह आवश्यक हो जाता है कि वह तथ्यों और प्रक्रियाओं के साथ जनता के सामने स्थिति स्पष्ट करे . हालांकि चुनाव आयोग ने एक प्रेस नोट जारी करके इनका जवाब दिया है लेकिन यह जवाब पर्याप्त प्रतीत नहीं होता .

विशेष रूप से मतदाता सूची के पुनरीक्षण जैसी प्रक्रिया में पारदर्शिता का महत्व बहुत अधिक है . किस आधार पर नाम जोड़ा गया, किस आधार पर हटाया गया, आपत्ति दर्ज करने की प्रक्रिया क्या है और उसके निवारण का तरीका क्या है, इन सभी सवालों के जवाब मतदाता के लिए सहज रूप से उपलब्ध होने चाहिए . डिजिटल व्यवस्था का अधिकतम उपयोग कर ऐसी प्रक्रियाओं को

सत्यापन योग्य और नागरिकों के लिए सुगम बनाया जा सकता है .यह जिम्मेदारी केवल चुनाव आयोग की ही नहीं है. सरकार को भी यह देखना चाहिए कि चुनाव आयोग को अधिक पारदर्शी, जवाबदेह और संस्थागत रूप से मजबूत बनाने के लिए यदि चुनाव सुधारों की आवश्यकता है तो उन्हें ऐसे मतभेद सार्वजनिक चर्चा का विषय बने तो सरकार के हित का विषय नहीं, बल्कि लोकतंत्र की दीर्घकालीन विश्वसनीयता का सवाल है .

दरअसल भारत जैसे विशाल लोकतंत्र में करोड़ों मतदाता अपने मतार्धिकार का निर्भय होकर इस्तेमाल करेंगे, जब उन्हें विश्वास होगा कि उनका वोट सुरक्षित है और चुनाव प्रक्रिया निष्पक्ष है . इसलिए चुनाव आयोग को निष्पक्षता के साथ पारदर्शिता को भी अपनी कार्यसंस्कृति का अभिन्न हिस्सा बनाना होगा . लोकतंत्र की मजबूती के लिए निष्पक्ष चुनाव जरूरी है और निष्पक्ष चुनाव के लिए ऐसा चुनाव आयोग जरूरी है, जिसकी निष्पक्षता केवल कही न जाए, बल्कि उसके हर फैसले और दैनंदिन कामकाज में स्पष्ट दिखाई भी दे .

ग्वालियर चंबल डायरी

सड़क पर चुनौती में बदलने लगे तोमर–सिंधिया खेमों के मतभेद



हरीश दुबे

समाज के एक कार्यक्रम में जिस तरह कार्यकर्ताओं के बीच मारपीटाई के हालात बने, उसने पार्टी में चल रही गुटबाजी को एक बार फिर से सतह पर ला दिया. ग्वालियर भाजपा के साफ तौर पर दो गुटों में बंटने की आधार–कथा एक दिन में तैयार नहीं हुई, बल्कि मार्च 2020 में सिंधिया के भाजपा में प्रवेश के साथ ही यह विभाजन महसूस किया जाने लगा. उससे पहले तक पार्टी के स्थानीय संगठन पर नरेंद्र सिंह का



एकाधिकारिक वर्चस्व था लेकिन सिंधिया द्वारा अपने हजारों समर्थकों के साथ भगवानमय होने के बाद पहले से जमे खेमे को अपना गढ़ बचाने की चिंता हुई तो नवानागुत्कों की कोशिश पार्टी पर वर्चस्व स्थापित करने की थी.

इसी खेमेबाजी के सुर राजनीति की अंतः वीथिकाओं से बाहर निकलकर पहली बार किसी सार्वजनिक कार्यक्रम में हिंसक स्वरूप में व्यक्त हुए. हालांकि यह कार्यक्रम विशुद्ध रूप से कु शवाहा समाज का था और इसका राजनीति से लेनादेना नहीं था. चूंकि ग्वालियर में कुशवाहा समाज के दोनों बड़े नेता नारायण सिंह और सांसद भारतसिंह क्रमशः सिंधिया और नरेंद्र सिंह से जुड़े हैं, लिहाजा अप्रत्यक्ष रूप से यहां भी राजनीति ने प्रवेश कर लिया.

भगवा के राष्ट्रीय फलक पर फिर छाया चंबल

ग्वालियर चंबल को एक बार फिर सतारूढ़ दल के राष्ट्रीय फलक पर मौका मिला है . भिंड के दो धुरंधर पूर्व विधायकों अरविंद भटोरिया और लालसिंह आर्य को क्रमशः आंध्र का प्रभारी और पश्चिम बंगाल का सहप्रभारी बनाया गया है . यानि चंबल के ये दोनों नेता सुदूर स्थित इन अहिंदीभाषी सीमावर्ती राज्यों में जाकर भगवा परचम फहराएंगे . कुछ ऐसी ही उपलब्धि ग्वालियर शहर के साथ जुड़ी है . यहां के आशीष ऊषा अग्रवाल को 37 दिन के भीतर ही दूसरा प्रमोशन देते हुए पार्टी का राष्ट्रीय मीडिया संयोजक बनाया गया है . इससे पहले 17 अगस्त को उन्हें मीडिया विभाग का राष्ट्रीय सह–संयोजक बनाया गया था . हालांकि ये तीनों नेता अब ग्वालियर से इतर जिम्मेदारी संभालेंगे लेकिन इन्होंने अटेर, गोहद और ग्वालियर पूर्व सीट पर टिकट की दावेदारी छोड़ी नहीं है .

निशानेबाज

है. कहावत है–सर बड़ा सरदार का, पैर बड़ा गंवार का. ’ पड़ोसी ने कहा, ‘ निशानेबाज, सर शब्द को लेकर इतना शीर्षासन करने

की जरूरत नहीं! इस समय सर का अर्थ बदल गया है. एसआईआर का मतलब स्पेशल इंटीसिव रिवीजन है. हिंदी में इसे मतदाता सूची का विशेष गहन पुनरीक्षण कहेंगे. इसके जरिए चुनाव आयोग दिवंगत और अपने रहने का स्थान बदलकर अन्यत्र चले गए लोगों का नाम काटकर मतदाता सूची से बाहर कर रहा है. बंगाल, बिहार में ऐसे करोड़ों नाम काटे जा चुके हैं. इससे अल्पसंख्यकों और

आदिवासियों में भय है कि उनका नाम वोटर लिस्ट से हट गया तो वह सरकारी सुविधाओं और कल्याणकारी योजनाओं से वंचित कर दिए जाएंगे. ’

हमने कहा, ‘जैसे परिवार नियोजन होता है, वैसे ही मतदाता नियोजन भी हो रहा है. वोटर लिस्ट बहुत फूल गई थी. उसे पतली और व्यवस्थित किया जा रहा है. जिसके पास डॉक्यूमेंट नहीं है, समझो वह गया काम से! मान लीजिए किसी व्यक्ति का जन्म अस्पताल की बजाय घर में हुआ. वह कम पढ़ा लिखा है और एसएससी पास नहीं कर पाया. उसके पास बर्थ सर्टिफिकेट, 10वीं पास करने का प्रमाणपत्र नहीं है. वह बाढ़ग्रस्त क्षेत्र का निवासी है जहां मकान व सारा सामान बाढ़ में बह जाता है तो डॉक्यूमेंट कहाँ से लाएगा? कस्ट्रक्शन और ईट भट्टे पर काम करने वाले मजदूरों के पास तो कुछ भी नहीं होता. ’

पड़ोसी ने कहा, ‘निशानेबाज ‘सर’ का मिजाज बहुत सख्त है. वह ऐसे बहाने सुनने को तैयार नहीं हैं. जिसके पास डॉक्यूमेंट नहीं, वह वोटर नहीं!’



प्रवेश कुमार मिश्र

बदलते दौर में कांग्रेस व भाजपा के बीच जिस तरह से डिजिटल राजनीतिक युद्ध आरंभ हुआ है उसके कारण डिजिटल स्पेश अब जमीनी और वैचारिक विमर्श के बजाय नैरेटिव वार की ओर बढ़ रहा है.राजनीतिक जानकारों की मानें तो कांग्रेस पार्टी ने डिजिटल संघर्ष में अपने आक्रामक मुहिम के कारण जिस तरह से पिछले कुछ समय में बढ़त बनाई है उसके कारण भाजपाई रणनीतिकारों ने अपनी रणनीति में व्यापक बदलाव किया है.

उल्लेखनीय है कि पिछले दिनों भाजपाई रणनीतिकारों ने एक महत्वपूर्ण बैठक के माध्यम से बदलते दौर में संघीय विधायक के विभिन्न माध्यमों पर पार्टी की पकड़ को और मजबूत करने की रणनीति पर मंथन किया है.जानकार बता रहे हैं कि इस डिजिटल संघर्ष में जहां एक तरफ विपक्ष भाजनात्मक मुद्दों और जन-भागीदारी के जरिए सोशल मीडिया पर आक्रामक बढत बनाने में जुटा है, वहीं सत्ताधारी दल ने अपने विशाल संगठनात्मक ढांचे को और अधिक सूक्ष्म तथा आंकड़ों पर आधारित बनाकर एक नया चक्रव्यूह तैयार किया है. कांग्रेस अपने वर्तमान डिजिटल अभियान के तहत जन–

अमेरिका की अंतरिक्ष में शस्त्र तैनाती

अमेरिका ने दावा किया कि उसने अंतरिक्ष में सक्रिय शस्त्र तैनात कर दिए हैं. यह ऐसे खतरनाक हथियार हैं, जो उपग्रह पर आधारित हैं. यह पर्यावरण में प्रवेश कर वहां से पृथ्वी पर निर्धारित टिकाओं को निशाना बना सकते हैं . इनसे रडार,

मिसाइल या लड़ाकु विमान की कार्यप्रणाली में व्यवधान पैदा किया जा सकता है . इन शस्त्रों को आर्बिट स्पेस कंट्रोल वेपन का नाम दिया गया है. यह प्रथम अवसर है, जब किसी देश ने अंतरिक्ष में शस्त्र तैनाती का दावा किया है . बाह्य अंतरिक्ष के सैन्य उपयोग में जमीन से मिसाइल लॉन्च कर शुत्र के सैटेलाइट को नष्ट करना, जमीनी लक्ष्यों को अंतरिक्ष में मौजूद शस्त्रों से तबाह करना शामिल है. ऐसे भी शस्त्र हैं, जो शुत्र के अंतरिक्ष व जमीन पर स्थित संवाद प्रणाली को जाम कर सकते हैं या उसके साइबर नेटवर्क पर हमला कर सकते हैं . इस तरह की अंतरिक्ष युद्ध क्षमताओं का प्रदर्शन अमेरिका, रूस, चीन और भारत ने किया है जिसमें



पृथ्वी से मिसाइल भेजकर अंतरिक्ष में उपग्रह को नष्ट किया जा सकता है . अभी तक अंतरिक्ष में एक उपग्रह से शुत्र के उपग्रह को टक्कर मारने की क्षमता का प्रदर्शन नहीं हुआ है, लेकिन तत्कालीन सोवियत यूनियन का दावा था कि उसने शीतयुद्ध के दौरान ऐसा प्रयोग किया था .

इसी तरह अंतरिक्ष में शस्त्र तैनात कर वहां से पृथ्वी के लक्ष्य पर प्रहार का प्रयोग भी प्रदर्शित नहीं किया गया है . क्रेमलिन के प्रवक्ता दिमित्री पेसकोव ने अंतरिक्ष को शस्त्रों से मुक्त रखने का आवाहन किया है. यद्यपि सभी देश अंतरिक्ष के शांतिपूर्ण उपयोग की बात करते हैं लेकिन ऐसा कोई अंतरराष्ट्रीय कानून नहीं है, जो अंतरिक्ष में शस्त्र तैनाती पर रोक लगा सके . इसके बावजूद 1967 की बाह्य अंतरिक्ष संधि आज भी महत्व रखती है . इसमें परमाणु शस्त्र या नरसंहार के अन्य शस्त्रों को अंतरिक्ष में ले जाने या तैनात करने से मना किया गया है .

संपादकीय बोर्ड		प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : ऋांति चतुर्वेदी
-----------------------	--	--

शब्द–सागर

12389

– डॉ. सागर खादीवाला

1	2	3	4	5	6
7			8		
		9		10	
11	12	13	14		
		15		16	17
18			19		
20		21			
22				23	

देने का कार्य, खैरात

ऊपर से नीचे

1. प्रकाशित, चमकीला
2. बालों का गुच्छा जो नीचे की ओर लटके
3. प्रकट होना या करना
4. बंदेर नामक पक्षी (सं.)
5. तांबे या पीतल की बड़ी बटलें
6. शरमाना
9. स्वभाव, जीवन में किए जाने वाले काम या आचरण
12. डगमगाना, झोका
- खाकर नीचे आना
14. आवाज देना, चिल्लाकर बुलाना
15. पानी से धोना
16. खाली
17. वस्तु–शरीर आदि की वह गर्मी अथवा सर्दी की वह स्थिति जो कुछ विशेष प्रकार से नापी जाती है
18. गोंद

बाएं से दाएं

1. पानी का बहाव, शव को नदी आदि में बहा देना (सं.)
5. समय का वह विभाग जो 24 सेकंड के बराबर होता है
7. हड़पना, निगलना
8. भाई का पुत्र
10. देना या सामने रखना
11. किसी वस्तु का घनत्व कम होना, बहुत जीर्ण होना
13. शत्रु, बैरी
15. पत्रकार का पेशा या व्यवसाय
18. कस्तूरी आदि का बना एक सुगंधित द्रव्य जो मूर्च्छित व्यक्ति को होश में लाता है
19. रक्त पीने वाला, राक्षस
20. जो खराब या निकट हो चुका हो
21. कोई शब्द या बात बार–बार कहना
22. कहकर मुकर जाना
- 23.

Solution 12388

प्र	व	च	न	म	म	ता
का		म	त	वा	न	गी
श		मा	न	क	लं	क
	वे	द		प		का
अं	ध	इ		नि	रा	प
त			या	हा		ति
रा	के	श		रि	हा	द
ल	लि	त		न	ल	ल

5. समय का वह विभाग जो 24 सेकंड के बराबर होता है

7. हड़पना, निगलना

8. भाई का पुत्र

10. देना या सामने रखना

11. किसी वस्तु का घन्त्व कम होना, बहुत जोर्ण होना

13. शुत्र, बैरी

15. पत्रकार का पेशा या व्यवसाय

18. कस्तूरी आदि का बना एक सुगंधित द्रव्य जो मूच्छित व्यक्ति को होश में लाता है

19. रक्त पीने वाला, राक्षस

20. जो खराब या निकृष्ट हो चुका हो

21. कोई शब्द या बात बार–बार कहना

22. कहकर मुकर जाना

23.

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म .प्र .)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में दाम्पत्य जीवन में वाद विवाद होगा. अधिकारियों के कोप का सामना करना पड़ेगा. व्यापार में अनिश्चितता की स्थिति रहेगी. वर्ष के मध्य में वैचारिक मंथन होगा.धार्मिक कार्यों में रुचि रहेगी. वर्ष के अन्त में आर्थिक योजनाओं में लाभ होगा. साहसिक कार्य क्षमता में वृद्धि होगी.

मेघ और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को दाम्पत्य जीवन में वाद विवाद

होगा. वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को कोप का सामना करना पड़ेगा. कर्क राशि के व्यक्तियों को व्यापार में स्थिति सामान्य रहेगी. सिंह राशि के व्यक्तियों को साहसिक क्षमता में वृद्धि होगी. मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को वैचारिक मंथन होगा. मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को आर्थिक योजनाओं में लाभ होगा. धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को धार्मिक कार्यों में रुचि रहेगी.

मेघ– साझेदारी में नयी योजना शुरू हो सकती है, नये मित्र बनेंगे, उच्चाधिकारियों के सहयोग से आजीविका संबंधी प्रयासों में सफलता मिलेगी.
वृषभ– कारोबारी विस्तार को योजना बनेगी, लाभकारी अवसर सामने आयेगें, पुराना विवाद दूर होगा, महत्वपूर्ण कार्य बनेगा. यश मिलेगा.
मिथुन– भावनाओं पर काबू रखें, लोग मजाक उड़ावेंगे, कौटुम्बिक सुख, दायित्वों की पूर्ति होगी, कार्य आसानी से पूरा होगा, महत्वपूर्ण व्यक्ति से मिलने का योग है.
कर्क– मामूली बात से करीबी रिश्ते में गलतफहमी हो सकती है, कामकाज के प्रति रूचि बनी रहेगी, शुभ सामचार मिलेगा, नियमितता का ध्यान रखें.

सिंह– सकारात्मक सोच से उलझे मामले सुलझेंगे, आर्थिक कार्य में स्थिरता रहेगी, शारीरिक अस्वस्थता रह सकती है, सोचे हुये कार्यों में विलंब होगा.
कन्या– अधिकारियों के आदेश की अवहेलना न करें, प्रयास करने से इच्छित कार्य बनेंगे, रक संबंधियों में मधुरता आयेगी, परिश्रम की अधिकता रहेगी.
तुला– सहकर्मियों के असहयोग से तनाव बढ़ सकता है, प्रापटी संबंधी कार्यों में परिश्रम करना होगा, लेन–देन में सफलता बांझनीय है.
वृश्चिक– विरोधियों से निपटने कूटनीति से काम लें, शिक्षा स्तान के कार्यों में सफलता मिलेगी, अनावश्यक विवादों को टालें, न्यायालयवी कार्यों में सफलता मिलेगी.

धनु– सोच समझकर नये कार्य में हाथ डालें, चिन्ता दूर होगी, नियोजित कार्यों में इच्छानुसार सफलता मिलेगी, दूर–दराज की यात्रा हो सकती है.
मकर– आप जिसे घाटे का सौदा समझ रहे हैं, उसमें अस्वस्थ लाभ होगा, सतान को सफलता मिलेगी, कामकाज में विलंब होगा, मित्रों का सहयोग मिलेगा.
कुम्भ– पारिवारिक कलह दूर करने में सफलता मिलेगी, वरिष्ठ लोगों का सहयोग रहेगा, शारीरिक स्थिरता रहेगी, प्रियजनों का सहयोग रहेगा.
मीन– उक्तका आपसी बातचीत से सुलझ सकता है, उच्च अध्ययन का निर्णय होगा, भाग्यवर्धक प्रयासों में सफलता मिलेगी, निजी योजनाओं में सफलता मिलेगी.



की जरूरत नहीं! इस समय सर का अर्थ बदल गया है. एसआईआर का मतलब स्पेशल इंटीसिव रिवीजन है. हिंदी में इसे मतदाता सूची का विशेष गहन पुनरीक्षण कहेंगे. इसके जरिए चुनाव आयोग दिवंगत और अपने रहने का स्थान बदलकर अन्यत्र चले गए लोगों का नाम काटकर मतदाता सूची से बाहर कर रहा है. बंगाल, बिहार में ऐसे करोड़ों नाम काटे जा चुके हैं. इससे अल्पसंख्यकों और

SUDOKU				7521				
6	3	7		1	5	4		9
	8						2	
		1		4	8			6
	6			9	7	1		
7	2						5	3
		5	6	3			9	
5			8	2		3		
	4						7	
1		3	7	5		2	6	8

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहली का केवल एक ही हल है.

नवभारत संपादक 7520

5	9	4	1	7	2	6	3	8
6	8	1	4	3	5	2	7	9
2	3	7	8	9	6	1	4	5
9	2	3	7	5	1	4	8	6
4	7	6	9	2	8	5	1	3
1	5	8	3	6	4	9	2	7
8	6	2	5	4	3	7	9	1
7	1	5	2	8	9	3	6	4
3	4	9	6	1	7	8	5	2